Date 27/07/2020

CLASS : B.A.(H) PART-2ND

SUBJECT : POLITICAL SCIENCE

PAPER : III (INDIAN GOVERNMENT & POLITICS)

CH-5 (DIRECTIVE PRINCIPLES OF State Policy - DPSP)

LECTURE NO. 23 (TWENTY THREE)

By, OM KUMAR SINGH
ASSISTANT PROFESSOR
DEPTT. OF POL. SC.
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
LNMU, DARBHANGA

राज्य के नीति निर्देशक तत्वों का महत्व :-
Importance of Directive Principles of state Policy

संवैधानिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण से निर्देशक तत्वों का बड़ा ही महत्व है। डॉ० पायली के अनुसार, "इन निर्देशक तत्वों का महत्व इस बात में है कि ये नागरिकों के प्रति राज्य के सकारात्मक दायित्व हैं।" डॉ० अंबेडकर के शब्दों में, "नीति निर्देशक तत्वों का बहुत बड़ा महत्व है। ये भारतीय राजव्यवस्था के लक्ष्य 'आर्थिक लोकतंत्र' को निर्धारित करते हैं जैसा कि 'राजनीतिक लोकतंत्र' में प्रकट होता है।" बी०एन० राव के अनुसार, "नीति निर्देशक तत्वों का राज्य प्राधिकारियों के लिए शैक्षिक महत्व है।"

राज्य के नीति निर्देशक तत्वों के महत्व को हम इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं:—

(1) सरकार के लिए निर्देश :—

संविधान के अनुच्छेद 37 में स्पष्ट रूप कहा गया है कि ये तत्व मौलिक हैं और कानून बनाकर लागू करना राज्य का कर्तव्य है अर्थात इन तत्वों को शासन के सर्वोच्च आदेश घोषित किया गया है। सरकार का यह परम कर्तव्य है कि नीति-निर्माण करते समय इसे पालन करें तथा यथा सम्भव इसे लागू करे। इस प्रकार ये राज्य के लिए मार्गदर्शन का कार्य करते हैं।

Saathi

Date __/__/____

(2) नैतिक आदर्शों के रूप में—

ये सिद्धांत या तत्व राज्य के लिए नैतिक आदर्शों के समान हैं। लोकतंत्रीय व्यवस्था में राजनीति का आधार नैतिकता होनी चाहिए।

(3) संविधान की व्याख्या में सहायक—

ये सिद्धांत संविधान की व्याख्या करने में भी सहायक हैं। संविधान की व्याख्या करने का अधिकार न्यायपालिका को है। न्यायपालिका ने संविधान की व्याख्या करने के दौरान सदैव ही नीति निदेशक सिद्धांत का ध्यान रखा है। न्यायपालिका ने हमेशा ही इन तत्वों को संविधान-निर्माताओं की इच्छा एवं सम्पूर्ण राष्ट्र की इच्छा माना है।

गोपालन बनाम मद्रास राज्य में पूर्व प्रधान न्यायाधीश श्री केनिया ने कहा, "राज्य के नीति-निदेशक सिद्धांत संविधान का भाग है इस कारण वह समस्त राष्ट्र के विवेक के प्रतीक है, न कि बहुमत दल के इच्छा के प्रतीक है, जिन्हें संविधान सभा के द्वारा प्रकट किया गया, जिसको समस्त देश के सर्वोच्च तथा स्थायी कानून बनाने का अंतरदायित्व सौंपा गया था।"

(4) राज्य के कार्यों को जाँचने की कसौटी—

ये तत्व राज्य के कार्यों को जाँचने का मापदण्ड भी हैं। इसके द्वारा जनता सरकार के कार्यों का अवलोकन करती है, परखती है कि सरकार द्वारा इन तत्वों के अन्तर्गत जिन कार्यों का वर्णन है, क्रियान्वित किया गया, व्यवहार में लाया गया अथवा नहीं। यदि जनता को लगता है सरकार द्वारा लोककल्याणकारी राज्य की स्थापना हेतु सही तरीके कार्य नहीं किए गए हैं तो अगले चुनाव में सत्ता से बाहर कर देती है।

Scanned with CamScanner

Saathi

Date __/__/____

(5) निदेशक तत्वों के पीछे जनमत की शक्ति :-

वैसे ये न्यायालय में प्रवर्तनीय नहीं है अर्थात इनके पीछे कानूनी शक्ति नहीं है, परन्तु जनमत की शक्ति है। किसी भी लोकतंत्रीय व्यवस्था में जनमत शक्ति से बड़ा कोई शक्ति नहीं होता है। जनता द्वारा चुनी हुई सरकारें जनता की इच्छाओं की अवहेलना नहीं कर सकती है अर्थात जनमत की उपेक्षा नहीं कर सकती है यदि ऐसा करने का दुःसाहस करेगी तो जनता उसे सत्ता से बाहर का रास्ता भी दिखा देगी।

प्रो० एम० वी पायली के अनुसार "ये तत्व राष्ट्रीय चेतना के आधारभूत स्तर का निर्माण करते हैं और जिनके द्वारा इन तत्वों का उल्लंघन किया जाता है, वे ऐसा कार्य उत्तरदायित्व की स्थिति से अलग होने की जोखिम पर ही करते हैं।"

(6) चरम सीमाओं से सुरक्षा :-

लोकतंत्रीय व्यवस्था में परिवर्तनशील जनमत के परिणामस्वरूप कभी एक विचारधारा वाले दल सत्ता ग्रहण करते हैं, तो कभी दूसरे विचारधारा वाले दल। जैसे- कभी दक्षिणपंथी तो कभी वामपंथी विचारधारा वाले तो, कभी अन्य विचारधारा वाले दल सत्ता ग्रहण करते हैं। निदेशक सिद्धांत इसी प्रकार के सरकारों के मार्गदर्शक बनाए रखने का कार्य करते हैं तथा उन्हें किसी प्रकार के एक तरफ झुकाव रखने से रोकने का भी कार्य करते हैं।

Page No.

Scanned with CamScanner

Date __/__/____

Saathi

(7) कार्यपालिका प्रधान द्वारा निर्देशक तत्वों का दुरूपयोग सम्भव नहीं है—

निदेश तत्वों से सम्बंधित विषयों पर बनाए जाने वाले कानून हेतु सरकार द्वारा पास गए विधेयक पर कोई भी कार्यपालिका प्रधान अस्वीकार करने का दुस्साहस नहीं कर सकता है। डॉ० अम्बेडकर के शब्दों में, "विधायिका द्वारा पारित विधेयक को अस्वीकृत करने के लिए राष्ट्रपति या राज्यपाल निदेशक तत्वों का प्रयोग नहीं कर सकते।"

इस प्रकार वास्तव में निर्देशक तत्व या सिद्धांत भारतीय शासन का सर्वोच्च सिद्धांत है। इन सिद्धांतों को व्यवहार में लाने पर ही भारत में सफल लोकतंत्र की स्थापना की जा सकती है। संपेक्ष में हम कह सकते हैं कि अगर इन निदेशक सिद्धांतों को अच्छी तरह व्यावहारिक रूप दिया जाए तो हमारा देश पृथ्वी पर स्वर्ग के समान हो सकता है।

सम्भावित प्रश्न:

राज्य के नीति निदेशक सिद्धांतों के महत्वों का वर्णन कीजिए।

Scanned with CamScanner